REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

विद्यार्थियों पर स्व अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. रजनी चौपड़ा
सहा.प्रो. शिक्षा विभाग सुरेश ज्ञान विहार विश्वविद्यालय जगतपुरा, जयपुर.

प्रस्तावना –

शिक्षा विद्या पादीयते उनयेति शिक्षा अर्थात प्राणी जिस भी साधन प्रणाली से ज्ञान अर्जित करता है उसी का नाम शिक्षा है। शिक्षा सीखना नहीं वरन् मस्तिष्क की शक्तियों का अभ्यास है। शिक्षा द्वारा बालक अपने व्यक्तित्व के सभी पक्षों का सर्वोतम विकास कर सकता है। शिक्षा के माध्यम से बालक अपने जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति कर सकता है।

डॉ. राधाकृष्णन (1979) ''जैव चेतना के निम्न स्तर पर मानव निर्विवाद रूप से एक प्राणी है किन्तु बुद्धि से युक्त होने के कारण प्राणि जगत में उसकी सामान्य सहभागिता के बावजूद अन्य प्राणियों की तुलना में उसकी श्रेष्ठता में संदेह नही किया जा सकता।

मनुष्य के जीवन में स्व अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है। जब यह स्व–अभिप्रेरणा विद्यार्थियों से सम्बन्धित हो तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में इनका महत्व बढ जाता है। अधिगम उद्देश्येां को पूर्ण करने हेतु विद्यार्थियों को अधिगम के लिए प्रेरित करना अति आवश्यक होता है।

प्रशिक्षणार्थी किसी कार्य को तभी सीख सकते है जब उनमें उस कार्य के प्रति रूचि हो और यह रूचि प्रेरणा से ही संभव है।

थॉमसन ने कहा है कि प्रेरणा छात्रों में रूचि उत्पन्न करने की कला है।

स्व–अभिप्रेरणा कक्षागत वातावरण का एक सबसे महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि प्रशिक्षणार्थी नए ज्ञान को पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित करते है। स्व अभिप्रेरणा शैक्षिक दृष्टि से अनेक समस्याओं का समाधान कर सकती हे। स्व अभिप्रेरणा एक ऐसी शक्ति होती है जो विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए तैयार करती है। स्व अभिप्रेरणा को एक आंतरिक शक्ति के रूप में जाना जाता है। जो विद्यार्थियों को लक्ष्य की ओर अग्रसर करने का कार्य करती है। स्व–अभिप्रेरणा विद्यार्थी को कार्य करने हेतु प्रेरणा प्रदान करती है।

परिचय

सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, वातावरण एवं महाविघालय व कक्षा का वातावरण, छात्रों के सीखने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। अध्यापक को इस प्रकार का वातावरण उत्पन्न करने का प्रयास करना चाहिए जो छात्रों की स्व अभिप्रेरणा में सहायक हो। उनके साथ स्नेह पूर्ण व्यवहार एवं कठिनाईयों का व्यक्तिगत रूप से निवारण करना चाहिए तथा आगे बढने के लिए प्रेरित करते रहना चाहिए। स्व अभिप्रेरणा शैक्षिक दृष्टि से अनेक समस्याओं का समाधान कर सकती है। स्व अभिप्रेरणा एक ऐसी शक्ति होती है जो विघार्थियों को अध्ययन के लिए तैयार करती है तथा उनमें अध्ययनशीलता को बनाये रखने के लिए उनमें आंतरिक भावनाएं पैदा करती है। अध्ययन के प्रति भावनाओं का सीधा सम्बन्ध विद्यार्थी के मन एवं मस्तिष्क से है, जिनसे अध्ययन अभिप्रेरित होता है। विद्यार्थियों का मस्तिष्क स्वस्थ एवं किन्हीं स्व अभिप्रेरणात्मक विचारों को

ग्रहण करने वाला होना चाहिए, क्योंकि उसमें अध्ययन के प्रति रूचि एवं अभिवृत्ति अभिप्रेरक से ही उत्पन्न हो सकती है। इस सम्बन्ध में यह तथ्य सत्य प्रतीत होता है कि " छात्रों के अध्ययन में स्व अभिप्रेरणा एक प्रकार की शक्ति एवं नव संचार है जो उनमें कार्यो को करने का जोश तथा रूचि उत्पन्न करती है। विद्यार्थी जो भी कार्य करता है उसमें किसी स्व अभिप्रेरणा की भूमिका अवश्य होती है।

अभिप्रेरणा –

अभिप्रेरणा प्राणी की वह आंतरिक स्थिति है जो प्राणी में क्रियाशीलता उत्पन्न करती है और लक्ष्य प्राप्ति तक चलती रहती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अभिप्रेरणा सीखने की क्रियाओं में विद्यार्थी की रूचि को उत्पन्न एवं उत्तेजित करने के साथ संबंधित हैं इस कारण ही विद्यार्थी शिक्षा में रूचि लेता है, किसान अपने खेतों में रूची लेता है इत्यादि। यह एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को काम की और अग्रसर करती है। इस शक्ति से मनुष्य अपने मूल लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास करता है। यद्यपि अभिप्रेरणा अधिगम का आधार नही है। परन्तु यह अधिगम की क्रिया को गति प्रदान करती है।

- **समस्या कथन –**

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर स्व अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में स्व अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के छात्र एवं छात्राओं में स्व अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के छात्र एवं छात्राओ में स्व अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करना।

- **अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पना**

1. उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में स्व अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के छात्र एवं छात्राओं में स्व अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के छात्र एवं छात्राओं में स्व अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

- **शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर–**

1. स्वतन्त्र चरः– स्व–अभिप्रेरणा
2. आश्रित चरः– विषय वर्ग कला एवं विज्ञान, छात्र व छात्राएं

- **शोध अध्ययन में प्रयुक्त विधि–**

शैक्षिक अनुसंधान की विधियों में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

- **शोध की जनसंख्या–**

शोध कार्य हेतु जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में माना है।

- **शोध के न्यादर्श–**

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर स्वअभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत करने के लिए शोधकर्त्री ने जयपुर जिले के दो विद्यालयों का चयन किया है तथा कक्षा 11 व 12 के कला व विज्ञान संकाय के 100 विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

चयनित न्यादर्श
जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विघार्थी

100 विघार्थी

संकाय	छात्र (50)	छात्राएं (50)	कुल
कला	25	25	50
विज्ञान	25	25	50

कुल – 100

- **शोध में प्रयुक्त उपकरण –**

"**उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर स्वअभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन**" के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

शोध का परिसीमन–

समय एवं साधनों की सीमितता के कारण अध्ययन का परिसीमन करना आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन की निम्न परिसीमाएं इस प्रकार है।

1. भौगोलिक दृष्टि से न्यादर्श के रूप में केवल जयपुर जिले को ही लिया गया है।
2. प्रस्तुत लघु शोध अध्यन हेतु जयपुर जिले के 2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के कला वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया किया है।
4. प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया किया गया है।
5. प्रस्तुत लघु शोध हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

- **शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी**

- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- टी–परीक्षण।

- **शोध अध्ययन की परिकल्पनाओं के मुख्य निष्कर्ष –**

उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय व विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में स्व अभिप्रेरणा के मध्यमानों में साथ अंतर नहीं पाया गया है।

सारणी

क्र.सं.	संकाय	विद्यार्थियों की सं.	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी.मान	सार्थकता
1.	कला	50	25.4	6.74	0.9	स्वीकृत
2.	विज्ञान	50	26.6	6.62		

1- $df = N^1+N^2 -2$ 50+50-2= 98

0.01 तर पर t का मान = 2.59

0.05 स्तर का t का मान = 1.96

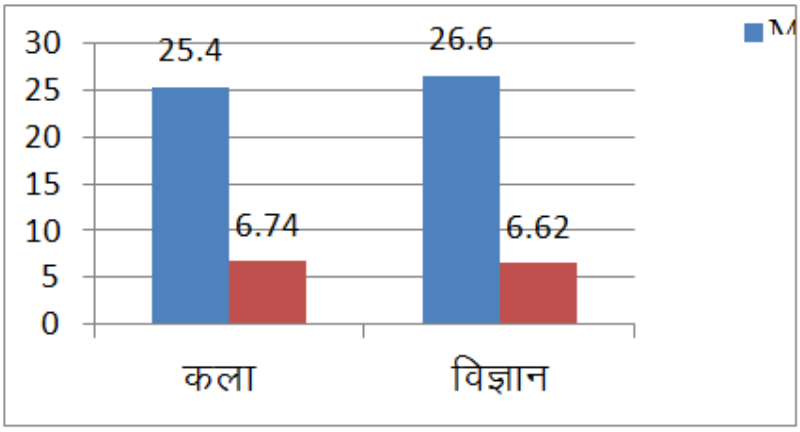

निष्कर्ष – परिकल्पना संख्या–1 की गणना करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रदत्तों की जाँच का प्राप्त टी–मान 0.9 प्राप्त हुआ है जो निर्धारित तालिका के मान से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात् दोनों ही संकाय के विद्यार्थियों की स्वअभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। जिसका कारण विद्यार्थियों को समान शिक्षण व्यवस्था व समान सुविधायें प्राप्त होना है।

- **उच्च माध्यमिक स्तर के कला संकाय के छात्र एवं छात्राओं में स्व अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।**

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी.मान	सार्थकता
छात्र	25	24.6	6.34	1.01	स्वीकृत
छात्राएँ	25	26.6	7.34		

df= N^1+N^2 -2 25+25-2 = 48

0.01 स्तर पर t का मान 2.59 है।

0.05 स्तर पर t का मान 1.96 है।

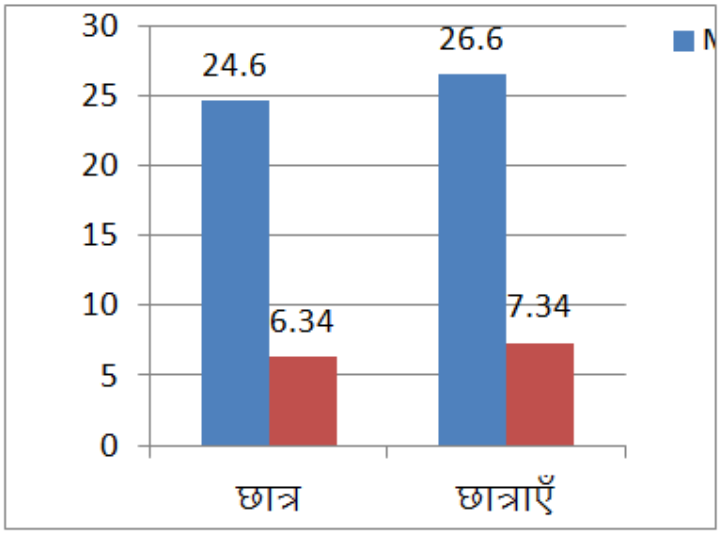

निष्कर्ष – परिकल्पना संख्या–2 की गणना करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रदत्तों की जाँच का प्राप्त टी–मान 1.01 ज्ञात हुआ है जो निर्धारित टी तालिका के मान से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अर्थात् कला संकाय के छात्र व छात्राओं की स्वअभिप्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। जिसका कारण वर्तमान में छात्रों के समान छात्राओं को भी समान शिक्षा का अधिकार व उचित वातावरण व परवरिश दी जाती है जिससे यह प्रेरित होती है।

- **उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के छात्र एवं छात्राओं में स्व अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।**

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी.मान	सार्थकता
छात्र	25	24.8	6.40	0.21	स्वीकृत
छात्राएँ	25	26.4	6.83		

df= N^1+N^2 -2 25+25-2 = 48

0.01 स्तर पर t का मान 2.59 है।

0.05 स्तर पर t का मान 1.96 है।

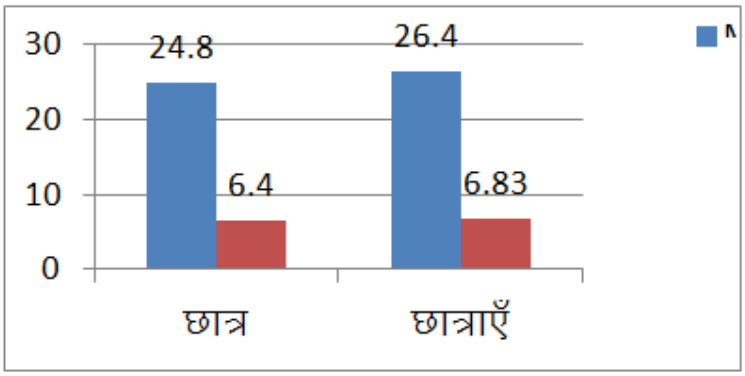

निष्कर्ष – परिकल्पना संख्या–3 की गणना करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रदत्तों की जाँच का प्राप्त टी–मान 0.21 प्राप्त हुआ है जो निर्धारित टी तालिका के मान से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात् विज्ञान संकाय के छात्र व छात्राओं की स्वअभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जिसका कारण छात्र व छात्राओं को प्राप्त होने वाली प्रोत्साहन राशि व पुरस्कार व सरकार द्वारा मिलने वाली सुविधायें जिनके आधार पर वह प्रेरित होकर विकास करते है।

शैक्षिक निहितार्थ–

शिक्षक हेतु–

- विद्यार्थियों को सही कार्यों के लिए प्रोत्साहन हेतु पुरस्कार वितरण की व्यवस्था।
- शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों को पुनबर्लन प्रदान करना।
- विद्यार्थियों को अधिक से अधिक विद्यालय कार्यों में भागीदार बनाना।

विद्यालय प्रबन्धकों द्वारा–

- विद्यालय प्रबन्धकों द्वारा ऐसी गतिविधियों का आयोजन करना जिससे विद्यार्थी के जीवन में व्याप्त कुंठाओं या चिंता जैसी परिस्थितियों से मुक्त होकर विकास की ओर अग्रसर हो।
- विद्यालय प्रबन्धकों द्वारा अभिप्रेरणा से संबंधित सेमीनार कराये जाए।
- विद्यालयों में एक निर्देशन व परामर्श दात्री समिति का गठन किया जाये।
- विद्यालय का वातावरण ऐसा हो जहाँ विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित महसूस करें।

अभिभावकों द्वारा –

- अभिभावकों को बच्चों के साथ मित्रता पूर्ण व्यवहार करना चाहिए।
- अभिभावकों द्वारा बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए उसे प्रत्येक क्षेत्र में भाग लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- बच्चों पर अनावश्यक किसी एक ही बात के प्रति दबाव नहीं बनाना चाहिए, क्योंकि बच्चे अनावश्यक दबाव के कारण वह कार्य नहीं कर पाते जो वह करना चाहते है।
- बच्चों पर अनावश्यक रोक–टोक नहीं लगानी चाहिए क्योंकि इन कारणों से बच्चा एकांकी की ओर अग्रसर होता है व सामाजिक बन पाता है।

भावी शोध के सुझाव –

- प्रत्येक शोध कार्य का प्रारम्भ समस्या से होता है उस समस्या हेतु कई समाधान प्रस्तुत किये जाते है व उन समाधानों के आधार पर भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किये जाते है। प्रस्तुत शोध कार्य के निम्न भावी सुझाव है–
- प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर जिले तक सीमित है इसे वृहद् रूप में अध्ययन हेतु राजस्थान के कई अन्य जिलों में किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध कार्य किशोर विद्यार्थियों तक ही सीमित है। इसे वयस्क विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध कार्य के न्यादर्श को बढाया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध कार्य को शिक्षकों पर विस्तारित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध कार्य को पिछड़े वर्गों, अनुसूचित जातियों व जनजातियों के विद्यार्थियों पर प्रमुख रूप से बढ़ाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बेस्ट जॉन डब्ल्यू; **"रिसर्च इन एजूकेशन",** प्रेक्टिस हॉल, (इंक) ऐंगिल बुक क्लिफस, यू.एस. ए., 1958
2. कपिल एच.के.; **"अनुसंधान विधियाँ",** एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, 1998
3. कपिल एच.के.; **"सांख्यिकी के मूल तत्व",** एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, 2007
4. कुलश्रेष्ठ एस.पी.; **''शिक्षा मनोविज्ञान'',** आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, 2008
5. मंगल अंशु बरौलिया, ए. अग्रवाल; **''शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी'',** राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा, 2007
6. मेकेगुइन, एफ.जे.; **"एक्सपेरीमेंट्स साइकोलोजी"**, प्रेक्टिस हॉल ऑफ प्रा.लि., 1969
7. एम बी. बुचय ट **सर्वे ऑफ एजुकेशनल रिसर्च,** वाल्यूम–प्प्ए एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1982–92

वैबसाईट

www.education.nic
www.R.T.I.com
www.thises.com